

## Padma Shri



### SHRI NARAYAN DEBNATH

Shri Narayan Debnath is a renowned comic artist, writer and illustrator in field of Bengali literature. His famous creations and work in Bengali comics are Handa Bhonda (1962), Bantul The Great (1965) and Nonte Fonte (1969). Apart from comics, he has done numerous illustrations for book cover page, story scenario and cartoons for a period of more than 60 years. He is an immensely popular figure in Bengali comics literature. His works are milestones in the history of Bengali comic literature.

2. Born on 21<sup>st</sup> November, 1925, Shri Debnath was interested in visual arts from a very early age. He studied fine arts from Indian Art College for five years but discontinued before getting his final degree. He started his career as a freelancer for advertising agencies creating movie slides and logos. In 1950, he was introduced to Dev Sahitya Kutir, a major publishing house. From 1950 to 1961, he illustrated a number of children's books including adventure novels and Western classics in translation. His journey in comics started in 1962 with Handa-Bhonda in Shuktara (popular Bengali children's magazine) published from Dev Sahitya Kutir.

3. Shri Debnath's first colored comic character 'Bantul the Great' was published in May-June edition of Shuktara. It was probably Bengal's first superhero character that was illustrated with red and black ink. It also acquired great admiration among the readers due to super-heroic yet comic action activities of Bantul. Apart from Bantul the Great, he also illustrated Rabi Chobi (1961), written by Bimal Ghosh about the childhood days of Rabindranath Tagore. His Rajar Raja/Chobite Vivekananda (1962) recreates the life and times of Swami Vivekananda, while his Chitre Durgeshnandini (1962) re-imagines Bankimchandra Chattopadhyay's novel Durgeshnandini in graphic novel techniques. But it was his Handa Bhonda (1962), Nonte Phonte (1969) and Shootki ar Mootki (1964) that revolutionized the comic genre in Bengal through the familiar trope of the 'terrible twins' at boarding school.

4. Shri Debnath gave birth to eponymous cartoon characters- Nonte and Phonte in 1969, and since then, stories revolving around them, have been regularly published in "Kishor Bharati" magazine. He created the record of doing highest number of illustrations in Bengal. His work for Tarzan stories which was continuous for 42 years, Bengali translation of foreign novels etc. are among his great works of illustration. He also created Detective Kaushik, an action adventure comics of serious genre. His style and composition mainly focused on characters speaking in the typical language of Bengali adda (the quintessential Bengali gossip sessions lasting hours) topped up with down to earth humour and subtle punning. Most of his work has been adapted for Bengali television. Nonte Phonte and Bantul the Great are animated shows now. A television series called Handa Bhonda was briefly on air.

5. Shri Debnath till now has received innumerable awards and accolades from different cultural sectors of society. In 2007, he was awarded "President's Special Recognition Award" at New Delhi. In 2013, he was awarded "Sahitya Akademi" and in the same year, he also received "Banga Bibhushan Award" from West Bengal Government. In 2015, he was awarded the honorary "D. Litt" degree by Rabindra Bharati.



### श्री नारायण देबनाथ

श्री नारायण देबनाथ बंगाली साहित्य जगत के जाने-माने हास्य कलाकार, लेखक और चित्रकार हैं। बंगाली कॉमिक्स में उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हांडा भोंडा (1962), बंटुल द ग्रेट (1965) और नॉटे फॉंटे (1969) हैं। कॉमिक्स के अलावा, उन्होंने 60 से अधिक वर्ष तक पुस्तकों के मुखपृष्ठ, कथा दृश्यों और कार्टून के लिए असंख्य चित्र बनाए हैं। वह बंगाली कॉमिक्स साहित्य की एक अत्यंत लोकप्रिय हस्ती हैं। उनकी कृतियां बंगाली हास्य साहित्य के इतिहास में कीर्ति-स्तम्भ हैं।

2. 21 नवम्बर, 1925 में जन्मे श्री देबनाथ की रुचि बहुत ही छोटी उम्र से ही दृश्य कलाओं की ओर मुड़ गई थी। उन्होंने पांच वर्ष तक इंडियन आर्ट कॉलेज से फाइन आर्ट्स की पढ़ाई की, लेकिन अपनी डिग्री हासिल करने से पहले ही उन्हें बीच में पढ़ाई छोड़नी पड़ी। उन्होंने फिल्म स्लाइड और लोगो बनाकर विज्ञापन एजेंसियों के लिए बतौर फ्रीलांसर अपने करियर की शुरुआत की। 1950 में उनका सम्पर्क एक प्रमुख प्रकाशन गृह 'देव साहित्य कुटीर' से हुआ। 1950 से 1961 तक उन्होंने अनूदित साहसिक उपन्यासों और पाश्चात्य उत्कृष्ट कृतियों सहित बच्चों की अनेक पुस्तकों के लिए चित्र बनाए। कॉमिक्स में उनका सफर 1962 में देव साहित्य कुटीर से प्रकाशित शुक्तारा (लोकप्रिय बंगाली बाल पत्रिका) में हांडा-भोंडा से शुरू हुआ था।

3. श्री देबनाथ का पहला रंगीन हास्य चरित्र 'बंटुल द ग्रेट' शुक्तारा के मई-जून संस्करण में प्रकाशित हुआ था। यह संभवतः बंगाल का पहला सुपरहीरो किरदार था जिसे लाल और काली स्याही से चित्रित किया गया था। इसने बंटुल की बहादुरी से भरे परंतु हास्यप्रद कारनामों के कारण पाठकों के बीच काफी प्रशंसा बटोरी। बंटुल द ग्रेट के अलावा उन्होंने रवींद्रनाथ टैगोर के बचपन के दिनों के बारे में विमल घोष की रचना रबी छोबी (1961) के लिए भी चित्र बनाए। उनके राजार राजा / छोबिते विवेकानंद (1962) में स्वामी विवेकानंद के जीवन और कालखंड को पुनर्जीवित किया गया है, जबकि उनके चित्रेदुर्गेशनंदिनी (1962) में ग्राफिक उपन्यास तकनीकों के जरिए बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास दुर्गेशनंदिनी की पुनर्कल्पना की गई है। लेकिन यह उनका हांडा भोंडा (1962), नॉटे फॉंटे (1969) और शूटकी अर मूटकी (1964) ही था जिसने बोर्डिंग स्कूल के 'शैतान जुड़वां बच्चों' के जाने-माने रूपक के माध्यम से बंगाल की हास्य शैली में क्रांतिकारी बदलाव कर दिया।

4. श्री देबनाथ ने 1969 में कार्टून पात्रों-नॉटे और फॉंटे को जन्म दिया और तब से उनके इर्द-गिर्द घूमती कहानियां नियमित रूप से "किशोर भारती" पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने बंगाल में सबसे ज्यादा संख्या में चित्र बनाने का रिकॉर्ड बनाया। टार्जन कहानियों के लिए 42 वर्षों तक जारी उनका कार्य, विदेशी उपन्यासों के बंगाली अनुवाद में चित्रकारी आदि उनकी महान कृतियों में शुमार हैं। उन्होंने गंभीर शैली की एक्शन एडवेंचर कॉमिक्स डिटेक्टिव कौशिक भी बनाई। उनकी शैली और रचनाएं मुख्य रूप से बंगाली अड्डे (घंटों चलने वाला बंगाली गपशप का सर्वोत्कृष्ट सत्र) की ठेठ भाषा बोलने वाले पात्रों के साथ-साथ सीधे सरल हास्य और हल्की-फुल्की चुहलबाजी पर केंद्रित रहीं। उनकी ज्यादातर रचनाएं बंगाली टेलीविजन के लिए रूपांतरित की गई हैं। नॉटे फॉंटे और बंटुल द ग्रेट अब एनिमेटेड शो हैं। हांडा भोंडा नामक एक टेलीविजन सीरीज भी थोड़े समय के लिए प्रसारित हुई।

5. श्री देबनाथ को अब तक समाज के विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से अनगिनत पुरस्कार और प्रशंसा प्राप्त हुई है। 2007 में, उन्हें नई दिल्ली में "राष्ट्रपति का विशेष सम्मान पुरस्कार" प्रदान किया गया। 2013 में उन्हें "साहित्य अकादमी" द्वारा सम्मानित किया गया और उसी वर्ष उन्हें पश्चिम बंगाल सरकार की ओर से "बंग बिभूषण पुरस्कार" भी प्रदान किया गया। 2015 में उन्हें रवीन्द्र भारती ने मानद "डी.लिट" की उपाधि से सम्मानित किया था।